

पाठ 1: मुक्ति का आश्वासन (आत्मिक जन्म)

बधाई हो, आप स्वर्गीय पिता के संतान हैं! यहाँ से आगे, आप परमेश्वर के साथ एक नए सम्बन्ध में हैं और परमेश्वर के सभी प्रतिज्ञाओं को हासिल कर सकते हैं।



I. हम परमेश्वर से अलग थे

पाप का परिणाम क्या है? यशायाह 59:2 में लिखा है कि –

“परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुख तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।”



II. मुक्ति का मार्ग

यीशु की मृत्यु + आपका विश्वास + पश्चाताप = मुक्ति



यीशु की मृत्यु – रोमियों 4:25 में लिखा है कि, “वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मों ठहरने के लिये जिलाया भी गया।”

आपका विश्वास - प्रेरितों 16:31 कहता है कि, “प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।”

पश्चाताप - 1 यूहन्ना 1:9 में लिखा है कि, “यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।”

क्या परमेश्वर ने वह कार्य किया जिसे वे करना चाहते हैं (मृत्यु और पुनरुत्थान)? हाँ या नहीं?

क्या जो कार्य आपको करने की आवश्यकता है उसे आपने किया है (विश्वास और पश्चाताप)? हाँ या नहीं ?

विश्वास किया है, तब आपने मुक्ति प्राप्त किया है!

III. आप एक नयी सृष्टि हैं

“इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।”

-2 कुरिन्थियों 5:17

यीशु में विश्वास करने के बाद आप कौनसे बदलाव को अनुभव किया?

- शान्ति
- परमेश्वर का प्रेम का महसूस
- पवित्रशास्त्र पढ़ने की इच्छा
- दूसरों की परवाह करना
- पाप का बोध
- अपने दिल में हल्का



IV. क्या मैं अभी भी मुक्ति पाया हूँ?

1 यूहन्ना 1:9 में लिखा है कि, *“यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।”*

लेकिन अगर हम जानबूझकर पाप करते रहते हैं बिना माफ़ी मांगे तो हमारे पाप क्षमा नहीं होंगे।

इब्रानियों 10:26 में लिखा है कि, *“क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं।”*

अगर हम दुबारा पाप करते हैं तो हमें क्या करना चाहिए?

- अपने पाप को नज़र अंदाज करें और उसे छिपाएँ
- स्वीकार करें और परमेश्वर से माफ़ी मांगें



V. आप का आत्मिक जन्म

आत्मिक जन्म पत्री

दिनांक _____ (वर्ष) _____ (माह)
_____ (दिन), मैं यीशु को अपने जीवन में
उद्धार करता के रूप में ग्रहण करता हूँ। उसने मेरे
पापों को क्षमा किया, मेरा प्रभु बन गया और मेरे
जीवन का नियंत्रण अपने हाथ में लिया। अब मैं
परमेश्वर का संतान बन चुका हूँ और एक नई सृष्टि
बन चुका हूँ। उसके पीछे चलने का एक नए जीवन
का मैंने शुरूआत किया है

हस्ताक्षर:

आनंद से अपने
आत्मिक जन्म पत्री
भरें!

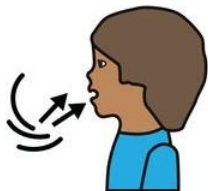
आज आप का
आत्मिक जन्मदिन
है!

आप को जन्मदिन
मुबारक!



पाठ 2: प्रार्थना को समझना (आत्मिक साँस लेना)

जब कोई बच्चा जन्म लेता है तो उसे साँस लेने की जरूरत होती है। प्रार्थना अपने नए आत्मिक जीवन में साँस लेने को सीखने की तरह है। प्रार्थना परमेश्वर से बात करना है।



I. हमें प्रार्थना करने की आवश्यकता क्यों है?

- A. यह परमेश्वर की आज्ञा है। यीशु ने अपने चेलों को बताया कि वे प्रार्थना करते रहें और कभी हार ना मानें।
- B. या हमारा पिता परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ता को मज़बूत करता है। प्रार्थना देना और लेना है।

हम परमेश्वर को देते -

- आराधना
- प्रेम
- समस्याएँ
- पाप

परमेश्वर हमें देते -

- शान्ति
- आशा
- क्षमा
- उत्तर



फिलिप्पियों 4:6-7 “किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जायें। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।”

II. प्रार्थना को कैसे करना (प्रार्थना का रवैया) – इसे सीखने के लिए क्रियाओं का प्रयोग करें

विश्वास के साथ प्रार्थना करें। संदेह न करें - याकूब 1:6 (सर को इशारा करें)

“पर विश्वास से माँगे, और कुछ सन्देह न करे, क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है।”

साफ़ हृदय से प्रार्थना करें। अपने हृदय को जाँचें (पापों को स्वीकार करें और अपनी नीयतों को जाँचें) - याकूब 4:2-3 (दिल को इशारा करें)



“तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; इसलिये तुम हत्या करते हो। तुम डाह करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर पाते; तो तुम झगड़ते और लड़ते हो। तुम्हें इसलिये नहीं मिलता



कि माँगते नहीं। तुम माँगते हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से माँगते हो, ताकि अपने भोग-विलास में उडा दो।”

परमेश्वर की इच्छा के लिए हियाव के साथ प्रार्थना करें - 1 यूहन्ना 5:14-15 (ऊपर की ओर

इशारा करें)



“और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम माँगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हम ने उससे मांगा, वह पाया है।”



प्रार्थना करते रहें। हार न माने। लूका 18:1 - 8 (हाथों को हिलाएँ दोहराने को संकेत करने के लिए)

लूका 18:1 - 8 से कहानी सुनाएँ

III. प्रभावशाली प्रार्थना के लिए सुझाव

- यीशु के नाम में प्रार्थना करें
- सहज रूप में प्रार्थना करें, जैसे कि आप अपने दोस्त से बात कर रहे हैं
- दिन के किसी भी समय प्रार्थना करें
- कहीं भी प्रार्थना करें

पाठ 3: प्रतिदिन की उपासना (आत्मिक खाना)

प्रतिदिन वचन पढ़ने से और आराधना करने से हमें अपना आत्मिक खाना मिलता है। यदि आप परमेश्वर से एक नजदीक रिश्ता बनाना चाहते हैं, तब आपको प्रतिदिन एक समय सुनिश्चित करना होगा।



याद करने के लिए वचन - मत्ती 6:33 “इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो”

I. क्यों प्रतिदिन की उपासना?

- परमेश्वर की आराधना करने के लिए (परमेश्वर मेरा स्वागत करते हैं)
- परमेश्वर से बात करने के लिए (परमेश्वर सुनते हैं)
- परमेश्वर से सुनने के लिए (हम सुनते हैं)
- अपने अध्यात्मिक जीवन को मज़बूत करने के लिए (हम आज्ञापालन करते हैं और बढ़ते हैं)



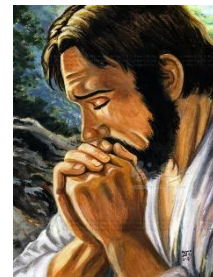
II. हमारी नियत

- परमेश्वर के लिए भूखे और प्यासे हैं (भजन 42:1-2)



III. कब? भजन 119:147-148 सुबह-सुबह, देर रात को, कभी भी

- ### IV. पवित्रशास्त्र से उदाहरण - इतिहास में शक्तिशाली आदमी और औरतों ने प्रतिदिन परमेश्वर के साथ समय बिताए। यीशु ने भी पिता परमेश्वर के साथ अकसर समय बिताया। मरकुस 1:35। उनमें से बहुतों ने परमेश्वर के साथ सुबह के समय में मिले। इब्राहिम, दानिय्येल, दाऊद और यीशु कुछ उदाहरण हैं।



V. आप के पास क्या होना चाहिए?

- पवित्रशास्त्र – लिखित या ऑडियो
- कॉपी और कलम
- शांत जगह
- निश्चित समय



VI. कैसे?

अपनी दिल को साफ करें और अपने पाप को स्वीकार करें



परमेश्वर को खोजें - वचन को पढ़ें या सुनें, या पिछले हफ्ते की कहानी के बारे में सोचें



परमेश्वर के प्रकाशन और आज्ञापालन करने में मदद के लिए प्रार्थना करें



जो परमेश्वर बोला उसका पालन करें



VII. समर्पण

क्या आप प्रतिदिन परमेश्वर से मिलने के लिए समर्पण करेंगे? हाँ या नहीं कब? कहाँ?

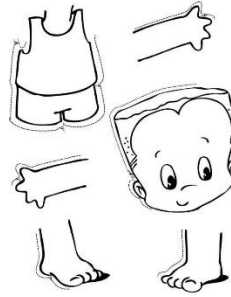
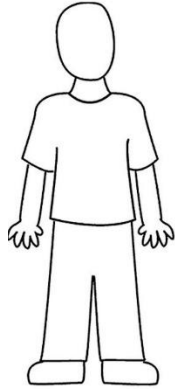
पाठ 4: मंडली (आप का आत्मिक परिवार)

I. परिवार

जब आप यीशु के पीछे चलने लगते हैं, आप परमेश्वर के परिवार का एक सदस्य बनते हैं। परमेश्वर आपका स्वर्गीय पिता है और सभी अन्य विश्वासी आपके भाई बहन जैसे हैं। पवित्रशास्त्र इस आत्मिक परिवार को मंडली सभा कहता है। यह एक भवन नहीं है और मंडली एक आराधना का स्थान नहीं है परंतु विश्वासियों का समूह है।



II. विश्वासी एक शरीर के अलग हिस्से हैं (रोमियों 12:4-5)



III. परमेश्वर का शरीर / मंडली क्या करता है?

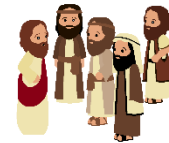
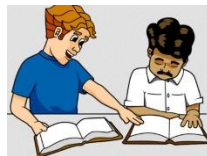
आराधना

संगति

शिक्षा

सेवा

सुसमाचार फैलाना



आप

को क्यों नियमित रूप से विश्वासियों के साथ मिलना चाहिए? _____

IV. मंडली के तीन जिम्मेदारियाँ (परमेश्वर का शरीर)

1. बप्तिस्मा (जल संस्कार)

रोमियों 6:4 "अतः उस मृत्यु का बप्तिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुआओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।"

बसिस्मा से हम यीशु के साथ अपनी एकता को दिखाते हैं। यीशु ने हमारे लिए एक उदाहरण के रूप में बसिस्मा लिया। हमें भी बसिस्मा लेना है। बसिस्मा हमारे विश्वास को पूर्ण करता है। बसिस्मा हमारे विश्वास की घोषणा करता है।

बसिस्मा हमारे विश्वास को पुष्टीकरण करता है।

बसिस्मा हमारे विश्वास का गवाह और चिन्ह है।

बसिस्मा एक आज्ञा है और हर शिष्य के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।



2. प्रभु भोज

यीशु ने अपनी चेलों को प्रभु भोज लेने के लिए सिखाया (मत्ती 26:17-19, 26-30)



यह याद कराता है कि हम परमेश्वर को उनकी मृत्यु और क्षमा के लिए धन्यवाद दें।

यह हमें अपनी क्रियाओं और विश्वास को जांचने में मदद करता है (1 कुरिन्थियों 11:23-29)

3. परमेश्वर को देना – समय, पैसा, कौशल

- भेंट (आराधना के रूप में परमेश्वर को धन्यवाद के उपहार)
- दसमांश (10 प्रतिशत जो हमें परमेश्वर को देने की उपेक्षा है)



मलाकी 3:8-10 – “परमेश्वर को मत लूटो। सारे दसमांश भण्डार में ले आओ।”

इस हफ्ते एक साथ मंडली बनने का समर्पण करें। इन तीन महत्वपूर्ण कामों को करें।

पाठ 5: परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है

हर नए आत्मिक बच्चे को जानना होगा कि परिवार का संचालक कौन है। उनको अपने स्वर्गीय पिता को जानना है। स्वर्गीय पिता अपने बच्चों से प्रेम करते हैं और उन्हें सुरक्षित करते, उनकी ज़रूरतें पूरी करते और प्रशिक्षित करते हैं।



पवित्रशास्त्र में स्वर्गीय पिता के चरित्र के विषय में बहुत सारी कहानियाँ हैं। इस पाठ में उनमें से कुछ का परिचय होगा।

I. स्वर्गीय पिता का प्रेम

यिर्मयाह 31:3 कहता है कि परमेश्वर आप से सदा प्रेम रखता आये हैं। लूका 15:11-24 हमें एक पिता और उसका खोया हुआ बेटा के बारे में एक सुन्दर कहानी बताता है। इस कहानी को पढ़ें। कैसे परमेश्वर इस कहानी के पिता की तरह हैं?



II. स्वर्गीय पिता का सुरक्षा

पुराने नियम में दानिय्येल के पुस्तक में एक कहानी है जिसमें परमेश्वर के तीन भक्त अपने स्वर्गीय पिता के द्वारा सुरक्षित किये जाते हैं। (दानिय्येल अध्याय 3) परमेश्वर आप को भी कैसे सुरक्षित कर सकते हैं?



III. स्वर्गीय पिता का व्यवस्थापन (ज़रूरतों को पूरी करना)

फिलिप्पियों 4:19 कहता है कि, "मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।"

एक उदाहरण बताइए जब आप ने देखा कि पिता परमेश्वर ने आप की ज़रूरतों को पूरा किया।

मत्ती 14:13-21 में एक कहानी है जहाँ यीशु ने अलौकिक रूप से भूखों को भोजन प्रदान करते हैं।

क्या परमेश्वर आप की ज़रूरतों को भी पूरी कर सकते हैं?



IV. स्वर्गीय पिता का अनुशासन और प्रशिक्षण



इब्रानियों 12:6 *क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।*

परमेश्वर अपेक्षा करते हैं कि हम उनका आज्ञापालन करेंगे। जब हम आज्ञा का उल्लंघन करते हैं वे हमें अपने दोस्त, पवित्रशास्त्र, परीक्षाएँ और पाप के परिणामों को हमारे जीवन में आने को अनुमति देने से हमें अनुशासित करते हैं। परमेश्वर के पिता रूपी हृदय का कौनसा हिस्सा आप के लिए सबसे महत्वपूर्ण है?

- उनका प्रेम
- उनका व्यवस्थापन (ज़रूरतों को पूरी करना)
- उनकी सुरक्षा
- उनका अनुशासन और प्रशिक्षण

पाठ 6: सुसमाचार को फैलाना (परिवार में वापस देना)

अब आप परमेश्वर के परिवार, मंडली, के सदस्य हैं। अब आप को परिवार में वापस देना है। परमेश्वर आपको बुलाहट देता है कि आप सुसमाचार फैलाएं और नए विश्वासियों को उसके मार्गों पर चलने के लिए आज्ञा मानना सिखाएं। तब वह भी और अधिक लोगों को मुक्ति का शुभ संदेश सुना पाएंगे और उन्हें प्रशिक्षित भी कर पाएंगे।



सुसमाचार में चार प्रकार के बुलाहट हैं -

1. ऊपर से बुलाहट - स्वर्ग से

यीशु राजा हमें आदेश देते हैं कि हम उन लोगों के पास जाएँ जिन्होंने मुक्ति के बारे में नहीं सुना।

“तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।” मरकुस 16:15



2. नीचे की बुलाहट - नरक से

लूका 16:27-28 नरक में अमीर आदमी की कहानी



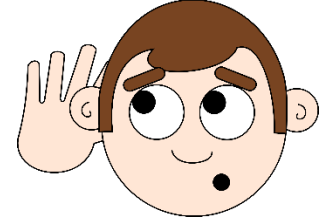
3. अपने दिल के अंदर की ओर से बुलाहट
पौलुस सुसमाचार सुनाने के प्रति बद्ध था।

“यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ, तो मेरे लिए कुछ घमण्ड की बात नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है। यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय!” 1 कुरिन्थियों 9:16



4. बाहर की ओर से बुलाहट - हमारे चारों तरफ के खोए हुए लोगों से

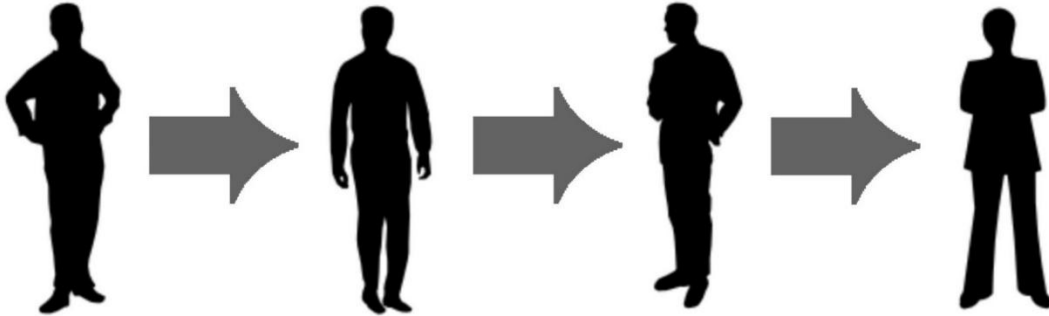
प्रेरित 16:9 पौलुस ने सपने में मकिदुनिया के व्यक्ति से पुकार को सुना।



हमारी ज़िम्मेदारी -

2 तीमुथियुस 2:2 हमें बताता है कि हमें लोगों को न केवल यीशु के पास ले आना है लेकिन उन्हें प्रशिक्षण दें जब तक वे दूसरों को भी सुसमाचार सुना न सके और उन्हें प्रशिक्षण दे सके।

“और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।”



प्रेरित 2:46-47 परमेश्वर चाहते हैं कि उनके हर शिष्य सुसमाचार फैलाएँ और शिष्यों की नयी मंडलियों को शुरू करें।



इस हफ्ता आप किस को सुसमाचार सुनाएँगे?